पराजयवादी भी। इसीलिए देहात की आबादी मे अधविश्वास पलते है। सुसगठित, सामूहिक काय द्वारा जीवन सघर्ष म रत होन के बदल किसान निस्सहाय से सकट के सामन नतमस्तक हो जाते है, या फिर जब वे स्वत स्फूत, असगठित और निष्फल विद्रोह का रास्ता अपनाते है तो निराशोन्मत्त आदमी के अधे साहस के प्रतीक के रूप मे।*

राष्ट्रीय आदोलन का विकास सामाजिक राजनीतिक और अन्य प्रकार के कायकर्ताओ के शैक्षिक और प्रचारात्मक काय, उनकी अपनी बढती हुई गरीबी, आदि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कारणो से, शिथिल गतिशील, क्रियाहीन भारतीय किसान की सामाजिक और मानसिक जडता और अकमण्यता समाप्त होने लगी। जैसा ऊपर बतलाया जा चुका है, धीरे धीरे ही सही, वे अपन सगठन बनान लग, अपनी माग को रूप देने लग और अपने वग एव राष्ट्र के आदालनो म भाग लेने लगे। इसकी यह भी वजह थी कि भारतीय राष्ट्रवादी यह समझन लगे थे कि किसाना की मन्द के बिना वे स्वतत्रता नही प्राप्त कर सकते और इस तरह व उन पर अधिक ध्यान देने लगे। काग्रेसी सोशलिस्ट कम्युनिस्ट आदि सब लोगो ने किसानो के बीच काम करना शुरू किया।

कृषक आबादी क बीच विभेदीकरण की तीव्र प्रक्रिया के कारण खेत मजदूरो का वग तजी से बढ रहा था। इस वग के पास कोई सपत्ति नही थी, ये गरीब थ, अपने पिछडेपन की वजह से इनमे अब भी पूरी चेतना का विकास भी नही हो सका था। लेकिन किसान आदालन और राष्ट्रीय आदोलना की चपेट म ये भी आ रहे थे।

आधुनिक बुद्धिवादी वग का उदय

अब हम भारतीय जनता की सामाजिक, राजनीतिक और सास्कृतिक विकास परपरा म बुद्धिवादियो की भूमिका का अवलोकन करें।

भारत म आधुनिक उद्योगो की स्थापना और औद्योगिक बुर्जुआजी के उदय के कई दशक पहले ही आधुनिक बुद्धिवादी वग का जन्म हो चुका था।[31] भारत म

---

*बहुत बड क्षत्र म बिखराव विभिन्न प्रकार क सामाजिक सगठन और रूढिवादिता जसा आर्थिक सामाजिक मानसिक जविक कमजोरियो क कारण सामाजिक सघर्षो क इतिहास म किसाना की अपना कोई स्वतत्र भूमिका नही होती। आधुनिक काल म यह या तो बुर्जुआजी का या फिर मजदूर वग की अगुआई म रहा। 1789 की फ्रेंच क्रांति म कृषि दासो न उध्वोंमुखी बुर्जुआजी का नेतृत्व माना जिसन सामतो आभिजात्य के विरुद्ध अपन सघर्ष म उनके सहयोग क लिए उन्हे स्वतत्रता और जमीन प्रदान करन का वादा किया। 1917 की रूसी क्रांति म किसाना न बोल्शविक पार्टी का समथन किया। केवल रूस क मजदूर वग का इस पार्टी न ही उन्हे जमीन दिलवान का वादा किया। सोशल रिवोल्युशनरी पार्टी जो विभिन्न तबको क किसाना का प्रतिनिधित्व करती थी टूट गई और उनका वामपथी भाग बोल्शविक खेमा से मिल गया।

Scanned with CamScanner

बुद्धिवादियो की पहली पीढी के राजा राममोहन राय और उनके दल न पाश्चात्य सकृति का अध्ययन किया और इस सस्कृति के बौद्धिक और प्रजातान्त्रिक सिद्धाता, धारणाओ और सत्य का अगीकृत किया।

उन्नीसवी सदी के प्रथम कुछ दशको म शिक्षित भारतीयो की सख्या बहुत कम थी। जब अग्रेजी शासन ने अधिकाधिक स्कूल कालेज खोले और उनके साथ ईसाई मिशनरियो ने भी इस दिशा म प्रयास किए तभी उन्नीसवी सदी के उत्तराद्ध म शिक्षित भारतीयो के बहुत बडे वग का जन्म हुआ और उससे बुद्धिवादियो का बहुत बडा वग उभर कर सामने आया।

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास म बुद्धिवादिया की भूमिका निर्णायक रही है। बहुत दूर तक उन्होने भारतीय जनता का आधुनिक राष्ट्र के रूप मे एकान्वित किया और अनेक प्रगतिशील सामाजिक धार्मिक सुधार आदोलना का सगठन किया। ये सारे राजनीतिक राष्ट्रवादी आदोलनो के जनक, प्रणेता, सगठन कर्ता और अग्रणी थ। घोर आत्मत्याग और अनेक कष्टो के बावजूद उन्होने जनता के बीच शक्षिक और प्रचारात्मक काय के द्वारा स्वतत्रता और राष्ट्रवाद के विचारा का अधिकाधिक लोगो तक पहुचाया। उन्होन राष्ट्रीयता और जनतत्र की भावनाओ से आत प्रोत सपन्न प्रादेशिक साहित्य और सस्कृति की सृष्टि की। इनके बीच स महान वैज्ञानिक, कवि, इतिहासज्ञ, समाजशास्त्री, साहित्यिक दाशनिक और अथशास्त्री उत्पन्न हुए। प्रगतिशील बुद्धिवादी वग न आधुनिक पाश्चात्य जनतान्त्रिक सस्कृति का स्वागीकरण किया और नवजात भारतीय राष्ट्र की जटिल समस्याआ को समझा। वस्तुत व ही आधुनिक भारत के निर्माता थे।

1851 और 1884 क बीच पशेवर वर्गों न देश म तीन सगठन बनाए मद्रास नेटिव एसोसिएशन, बाब एसोसिएशन और इडिया एसोसिएशन (अध्याय 10 देखें)। इन्होने नौकरियो के भारतीयकरण के लिए सरकार पर जोर डाला। इनका तक था कि किसी देश का राजतत्र वही के दशवासियो द्वारा चलाया जाना चाहिए, विदेशियो द्वारा नही। इस तक म उनका अपना वग स्वाथ भी निहित था।

1857 के बाद देश म विश्वविद्यालया की स्थापना हुई तो शिक्षित भारतीयो की सख्या तेजी से बढी। राष्ट्रीय चेतना सबस पहले इन्ही शिक्षित भारतीयो म आई। बुद्धिजीवी वग के अग्रणी नेताओ ने वाणिज्यिक और आरभिक औद्योगिक बुर्जुआजी के समथन और बल पर 1885 म भारतीय जनता का पहला राष्ट्रीय राजनीतिक सगठन कायम किया, इडियन नेशनल काग्रेस। काग्रेस ने अग्रेजी को अपनी भाषा बनाया और इस तरह प्रबुद्ध शिक्षित वग के लोग ही सबसे पहले इसके नेता हुए (*देखे अध्याय 10*)।

भारत का राष्ट्रीय आदोलन मुख्यत इडियन नेशनल काग्रेस के नतृत्व म बीसवी सदी क पहले दशक म व्यापक मध्यमवर्गीय आधार पर और 1918 के बाद और अधिक व्यापक जन आधार पर विकसित हुआ इसका बाद का इतिहास राजनीति वाल अध्याय म चर्चित है। अभी ध्यान देने की मुख्य बात यह है कि अपने

Scanned with CamScanner

विकास के प्रत्येक चरण म प्रबुद्धवग न ही इस आदोलन का नेतृत्व किया, इस वग के चाहे जिस अग ने जिस किसी विचार पद्धति, क्रिया प्रणाली और कायक्रम के साथ यह काम किया हो। उदारवादी चरण मे राष्ट्रीय आदोलन की अगुआई आधुनिक अग्रेजी शिक्षा प्राप्त गोपालकृष्ण गोखल, दादाभाई नौरोजी, एस० वनर्जी एम० जी० रानाडे, फिरोजशाह महता आदि उदारवादी नताओ न की। दूसरे लडाकू चरण मे वाल गगाधर तिलक, वी० सी० पाल, अरविन्द घोष, लाला लाजपतराय जैसे अग्रेजी के ही जानकार प्रबुद्ध वग क लोगो और महान आत्म त्यागी नेताओ ने इस आदोलन की अगुआई की। आतकवादी आदोलन म अपेक्षा कृत कम लोगो ने सक्रिय भाग लिया लेकिन इसकी भी शुरूआत और अगुआइ मध्यमवर्गीय युवक वग न ही की जिन्होन आइरिश आतकवादी और रूसी शून्य वादी (निहिलिस्ट) आदोलनो का अध्ययन किया था। 1918 क वाद भी, जब राष्ट्रवादी आदालन कई ऐतिहासिक कारणो से (देखे अध्याय 10) जन माधा रण म फैल चुका था, इसका नेतृत्व गाधी, सी० आर० दास मोतीलाल नेहरू बिटठल भाई पटल सी० राजगोपालाचारी राजेन्द्रप्रसाद, जवाहरलाल नेहरू सुभाष वोस और समाजवादी और साम्यवादी वुद्धिवादिया जसे शिक्षित वग क ही लोगा न किया।

हिंदुओ मुसलमाना और अन्य सप्रदायो म जो विभिन्न मामाजिक धार्मिक सुधार आदोलन हुए उनका भी सगठन उन मप्रदाया क शिक्षित लोगो ने ही किया। उदाहरणाथ शिक्षित वग के ही सदस्य वी० आर० अवेदकर न दलित जातियो के वीच सामाजिक सुधार और राजनीतिक शिक्षा के आदालन का नेतृत्व किया। वस्तुत ब्रिटिश शासनकाल मे भारत म जितने भी प्रगतिशील सामाजिक राजनीतिक सास्कृतिक आदोलन हुए व शिक्षित लागा के ही काम थ जिन्हाने नई पाश्चात्य सस्कृति और शिक्षा का अध्ययन मनन किया था।

आधुनिक जगत मे सव देशो म प्रबुद्ध वग ने ही प्रगतिशील आदोलना का मगठन और नेतृत्व किया है। चीन भारत और ऐसे कुछ अन्य दशो म जहा साधारण जनता अधिकाशत अशिक्षा और अज्ञान के गत मे पडी है, वहा प्रबुद्ध वग की भूमिका और अधिक विशिष्ट और महत्वपूण है क्याकि इन देशा की जनता आत्म सगठन और आत्म प्रबोध म न्यूनतम पहलकदमी भी नही ल सकती। शिक्षित भारतीयो न ही दूसरे देशो म हुए किसान और मजदूर आदोलना की जानकारी और उनके अध्ययन के आधार पर भारतीय किसानो और मजदूरो का पथ प्रदशन किया और अपने सगठन और आदोलन वनान म उनकी मदद की। अगर भारतीय जनता शिक्षित रही होती तो वह स्वाध्याय द्वारा दूसरे दशा क मजदूर एव अन्य आदोलना की जानकारी हासिल कर सकती थी और अपना पहलकदमी पर वैसे मगठन वना सकती थी। शिक्षित भारतीया न जनतन्त्र और स्वतन्त्रता क आधुनिक विचारो को भी आत्मसात किया था और उन्ह दूसर दशो की सामाजिक सास्कृतिक और वनानिक उपलब्धिया का ज्ञान था। इस

Scanned with CamScanner

लिए उ होने अशिक्षित भारतीय जनता के बीच इस ज्ञान का भी प्रचार किया।

भारत मे अग्रेजी शासन द्वारा चलाई गई शिक्षा पद्धति के फलस्वरूप इस शिक्षित मध्यम वग का ज म हुआ था। वकील, डाक्टर, टेकनीशियन, प्रोफेसर, पत्रकार, सरकारी नौकर, किरानी विद्यार्थी इत्यादि इस वग के सदस्य थे। उ नीसवी सदी के उत्तराद्ध म और उसके बाद भी आधुनिक शिक्षण मस्थाओ की सख्या म अनवरत वृद्धि के कारण शिक्षित मध्यम वग की तादाद लगातार बढती गई। 1861 का काउसिल एक्ट शिक्षित आभिजात्य को एक तरह की रियायत थी।' '1892 का काउसिल ऐक्ट पेशेवर वर्गों की बढती हुई शक्ति और उनको दी गई रियायता का एक अ य सूचक था।[3]

भारत का आर्थिक विकास भारत म आधुनिक शिक्षा के विस्तार का समानुपाती नही था। किसी भी समाज म साधारण आर्थिक प्रगति औद्योगिक विकास से ही आती है और इस तरह उस देश की मपत्ति और समृद्धि बढती है, नौकरिया की सख्या मे वृद्धि हाती है आय के अ य साधन उपलब्ध होते है, लेकिन भारत म मुख्यत ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीति के कारण यह औद्योगिक विकास तेजी से नही हो रहा था। आर्थिक और शक्षिक विकास म विषमता के कारण उ नीसवी सदी के अत तक शिक्षित वर्गों म बेकारी बहुत बढ गई थी। शिक्षित बेराजगार के कारण बढे हुए आर्थिक कष्ट से उत्प न राजनीतिक असतोष लडाकू राष्ट्रवाद के उदय का एक प्रमुख कारण था बालगगाधर तिलक, लाला लाजपत राय विपिनचद्र पाल, अरवि द घोष इस लडाकू राष्टवाद के प्रमुख नता थे। शिक्षित लागो की बेरोजगारी के कारण आतकवाद का भी ज म हुआ।

बाद के दशक म जस जैस देश म शिक्षित मध्यम वग बढा और अपनी वर्गीय मागो के प्रति जागरूक हुआ वैसे वसे ये लाग अपन विशिष्ट सगठन बनाने लगे और अपनी मागा को रूप देने लग। इस तरह बढती हुई तादाद मे इन लोगो के अपन सगठन बनन लग उनक आम सगठन के अलावा जसे नौजवान और स्वयसेवक सघ इत्यादि। 1930 के बाद यह प्रक्रिया विशेष तौर पर तीव्र हुई। इस काल म अपन हितो की रक्षा और अपनी शिकायता को दूर करने के सघष के लिए शिक्षक वकील, इजीनियर इत्यादि विभिन्न दला के सघ और सगठन बने। ये सगठन किसान सभाओ और मजदूर सघो जैसे थ, जो मजदूरो और किसाना के वर्गीय हितो की रक्षा के लिए बने थे। 1934 के बाद छात्र सघो और सगठनो की तेजी के साथ वृद्धि हुई और उनके अखिल भारतीय सगठन भी बन।

आधुनिक भारतीय बुर्जुआजी के हित, सगठन और आदोलन

अब हम भारतीय समाज म उदित एक और नए वग पर विचार करगे। अग्रेजी शासन काल म देशा एव विदेशी व्यापार क विस्तार और समयातर से उद्योगा और बका की स्थापना क कारण भारत म आधुनिक वाणिज्य औद्योगिक और वित्तीय बुजुआजी का ज म हुआ। अ य दशा की तरह यहा भी यह नय

Scanned with CamScanner

आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से सबसे तगडा वग था।

भारतीय बुर्जुआजी की उत्पत्ति और उसका विकास व्यापार, वाणिज्य और उद्याग के विस्तार से सबधित रहे हैं। आधुनिक उद्योगा वाल अध्याय म इनक विस्तार की कथा कही गई है। यहा हम इस वग के मुख्य हिता, विशिष्टताओ, समस्याओ, सगठना और सघर्षा की चर्चा करेग।

ज्ञातव्य है कि व्यापार, उद्याग और बैंकिंग म यूरापियन भी लग हुए थे। अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए उन्होने आर्थिक उद्यम के आधार पर भारतीया स मिलकर या फिर अलग से अपने सगठन बनाए। यूरोपियनो का पहला चेंबर आफ कामस (वाणिज्य मडल) कलकत्ता म 1834 म स्थापित हुआ, और बबई और मद्रास म 1836 म। पहला भारतीय चेंबर आफ कामस, बगाल राष्ट्रीय चेंबर आफ कामस 1887 म शुरू हुआ। इडियन मर्चेंटस चेंबर 1907 म बबई म स्थापित हुआ था। मारवाडी चेंबर आफ कामस कलकत्ता म 1900 म शुरू हुआ और मद्रास म 1909 म साउथ इडियन चेंबर आफ कामस का स्थापना हुई। जिस व्यापार वाणिज्य, उद्योग आदि म भारतीय लग थे या जिससे उनका सबध था उसकी रक्षा के लिए 1925 म इडियन चेंबर आफ कामस की स्थापना हुई।[33]

बाद म भारतीय वाणिज्यिक समुदायो के प्रादेशिक सगठन भी बने, जसे 1927 म महाराष्ट्र चेंबर आफ कामस बना। भारतीय और यूरापिय वाणिज्यिक वर्गों के पारस्परिक द्वद्वाघात के कारण इन दलो को अपने स्वतत्र सगठना की आवश्यकता पडी। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि 'जहा दोनो व्यापार मे लगे थे वहा उनके स्वाथ भिन्न थे, जहा वे मिल मालिक थे या लोगो को रोजगार और नौकरी दिए हुए थ, वहा उनके स्वाथ अभिन्न थ, जैसा बबई के मिल ओनस एसोसिएशन से स्पष्ट है।'[34]

भारतीय व्यापारिया की मुख्य शिकायत यह थी कि व्यापार के क्षेत्र म भारतीया की तुलना मे यूरोपियना को सरकार स अधिमानिक सुविधाए प्राप्त थी और गर ब्रिटिश देशो के साथ भारतीय तिजारत पर बहुत सारे अकुश लग थ। भारत मे ब्रिटिश वाणिज्यिक हिता को जा विशेषाधिकार प्राप्त थे, भारतीय वाणिज्यिक समुदाय ने उनकी आलाचना की और उनके विरुद्ध सघप भी किए, जसे उन्होने तटीय पोत परिवहन म ब्रिटिश व्यवसायिया के प्राधिकारा पर हमला किया। मि० हाजी न लेजिस्लेटिव असेम्बली म रिजर्वेशन आफ द कोस्टल ट्रफिक आफ इडिया (भारत के तटवर्ती नौ परिवहन के अभिरक्षण) का प्रश्न उठाया। उनका तक था कि भारत के तटीय व्यापार म विदेशी एकाधिकार से भारतीय नौ परिवहन की प्रगति को बाधा पहुच रही है।

राष्ट्रवादी वैज्ञानिक सर पी० सी० राय ने कहा अग्रज इस देश म जिस स्थिति का उपभाग करत रहे है और नए सविधान मे जो कुछ वे चाहत है, वह अधिकारो की समानता नही वरन शासक जाति के रूप म विशेषाधिकार अपनी खुद की सरकार मे मिलन वाल प्राधिकारा की सुरक्षा और विद्यमान असमानताओ

Scanned with CamScanner

की अवस्थिति। अगर य अधिकार समाप्त नही होत है तो भारतीयो को अपना आर्थिक भविष्य बनाने के अवसर नही मिलेगे।'[35]

फिर भी वाणिज्यिक समुदायो ने ब्रिटिश सरकार का वसा प्रखर विरोध नही किया, जैसा उद्योगपतियो ने, जिनका सघप कालातर मे विकसित हुआ। इसकी वजह यह थी कि विदेशी और नवजागत भारतीय औद्योगिक स्वार्थों के बीच मडी के लिए जो अवश्यभावी सघप हुआ, उसमे ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश उद्योगो की रक्षा की हर सभव कोशिश की।

'बुर्जुआजी की राष्ट्रीयता का जन्म मडी म होता है।[36] अपन जन्मकाल से ही, औद्योगिक बुर्जुआजी ने सरकार के विरुद्ध, नवजात भारतीय उद्योगा को सुरक्षा प्रदान करने क सवाल पर, घनघोर मोर्चाबदी की। 1880 के बाद आधुनिक उद्योग भारत म तजी से बढे और औद्योगिक बुर्जुआजी की ताकत बढी। राष्ट्रवादी प्रबुद्ध वग ने भारत मे राष्ट्रीय आदोलन की शुरूआत की और 1885 म प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक सगठन इडियन नशनल काग्रेस की स्थापना हुई।

1905 तक ऊर्ध्वोन्मुख औद्योगिक वग काफी तगडा और जागरूक हो चुका था। पशेवर वग नौकरिया और पेशा मे अग्रेजो के एकाधिपत्य को समाप्त करन के लिए पहले ही से सघप कर रहे थे। 1905 के लगभग औद्योगिक वर्गों ने भी पेशेवर वर्गों को अपना समथन प्रदान करना शुरू कर दिया।

> पशेवर वर्गों का यह उद्देश्य था कि उन अग्रेजा का स्थान ग्रहण कर सके जो मेडिसिन, कानून और पत्रकारिता के क्षेत्र म एक प्रकार से एकाधिकार जमाए हुए थे। उद्योगपतिया का वग भी औद्योगिक क्षेत्र म अग्रेजा के एकाधिकार का समाप्त करना चाहता था। सूती कपडा का उद्योग सबसे बडा भारतीय उद्योग था और यह ब्रिटिश व्यापारियो क हिता के लिए नुकसानदेह था। भारत मे पूजीवाद का विकास औपनिवेशिक प्रकार का था। देश के सामाजिक अयतत्र और ब्रिटिश शासक वग के अनम्य मुक्त व्यापार के कारण भारत के उदीयमान उद्योगपतिया के हित को नुक्सान हो रहा था। उन्ह वाणिज्यिक विभेद और अबाध व्यापार के विरुद्ध सघप करना पडा। उनका नारा था स्वदेशीवाद और सरक्षणवाद। इन उदीयमान औद्योगिक वर्गों ने स्वभावत पशेवर वर्गों के साथ एकता कायम की।[37]

ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीति के आलोचका का कहना था कि ब्रिटिश उद्योगो के हित म भारतीय उद्योगो के मुक्त विकास पर रुकावटें लगाई जा रही थी।[38]

इसके कारण भारत ब्रिटिश उद्योगो के लिए कच्चा माल उत्पन्न करने वाला कृषि प्रधान देश रह गया था। भारतीय आर्थिक विकास ब्रिटिश उद्योगा के हित की दृष्टि से अनुकूलित और अधीनस्थ था, भारतीय अयतत्र ब्रिटिश अयतत्र का औपनिवेशिक सहायक होकर रह गया था। जान ब्यूकप न कहा है कि भारत के औद्योगिक विकास पर निम्नलिखित प्रतिबध लग थ (क) यह ब्रिटिश पूजी के

Scanned with CamScanner

नियंत्रण में रहे, भारतीय पूंजी की जूनियर पार्टनर की स्थिति हो, (ख) भारतीय उद्योग बराबरी के स्तर पर ब्रिटिश उद्योग से होड़ न ले सके, और न उस कच्चे माल का इस्तेमाल कर सके जिसकी ब्रिटिश उद्योगों को जरूरत हो (ग) ब्रिटेन में बने सामान के भारतीय बाजार पर किसी तरह का आघात न पहुंचे, और (घ) उत्पादन के साधनों का निर्माण कर सकने वाले उद्योगों का विकास न हो।'[39]

संरक्षण, अनुकूल विनिमय अनुपात बढ़ते हुए उद्योगों के लिए अर्थ साहाय्य, आदि अपने खुद के नारों के साथ औद्योगिक बुर्जुआजी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में पदार्पण किया। बीसवीं सदी के पहले दशक में औद्योगिक पूंजीपतियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लेना शुरू किया। इसी काल में यह वर्ग इंडियन नेशनल कांग्रेस की ओर आकृष्ट होने लगा और इसने विदेशी माल के बहिष्कार और स्वदेशी के कार्यक्रम का उत्साहपूर्ण समर्थन किया, क्योंकि इनसे उनका वर्ग स्वार्थ पूरा होता था। स्वदेशी आंदोलन सफल रहा, कुछ दिनों तक, और इससे भारतीय उद्योगों को बल मिला खासकर सूती कपड़ों के उद्योग को।

राष्ट्रीय आंदोलन अब तक प्रबुद्ध वर्ग वाणिज्यिक बुर्जुआजी के कुछ अंश और शिक्षित मध्यम वर्ग तक ही मुख्यतया सीमित था लेकिन 1905 के बाद इसे अधिक व्यापक आधार मिला क्योंकि मध्यम वर्ग और राजनीतिक चेतनाशील उद्योगपतियों ने बड़ी तादाद में इसमें हिस्सा लेना शुरू किया।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) के काल में देश में औद्योगिक विकास बहुत तेजी से हुआ। इसकी खास वजह यह थी कि ब्रिटिश और दूसरे विदेशी उद्योग मुख्यतः युद्ध की ओर लगे और भारतीय बाजार के लिए सामान न दे सके। इस तरह भारतीय उद्योगों का तेजी से विस्तार हो सका। फिर, सामरिक कारणों से ब्रिटिश सरकार ने स्वयं भी इस्पात जैसे कुछ अन्य उद्योगों को प्रश्रय दिया। इसके चलते उद्योगपतियों की सामाजिक और आर्थिक शक्ति में और अधिक वृद्धि हुई।

लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन और उसके प्रमुख संगठन इंडियन नेशनल कांग्रेस में इस वर्ग के बल और प्रभाव में युद्ध काल के बाद ही विशेष प्रगति हो सकी। खासकर 1919-20 के बाद कांग्रेस संगठन पर इसका विशिष्ट प्रभुत्व स्थापित हुआ। अब उद्योगपतियों के प्रभाव ने कांग्रेस के कार्यक्रम को निरूपित करना शुरू किया और इसके संघर्षों के रूप और ढंग प्रकार और प्रणाली को भी निर्धारित किया। इंडियन नेशनल कांग्रेस पर इस वर्ग का नियंत्रण लगातार बढ़ता ही रहा।

1919-20 में इंडियन नेशनल कांग्रेस गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव में और गांधी के राजनीतिक नेतृत्व में आई। गांधी ने आधुनिक मशीनतंत्र और उद्योगों से अपने अनम्य विरोध की घोषणा कर दी थी। लेकिन भारतीय उद्योगपतियों की आशंका तब समाप्त हो गई जब 1920 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गांधी ने स्वदेशी विषयक प्रस्ताव का समर्थन किया। प्रस्ताव में कहा गया था कि सूती माल में स्वदेशी का ही व्यापक रूप में उपयोग हो (देखें राजनीतिक विषयक अध्याय)।

Scanned with CamScanner

इतिहास एव अर्थतत्र के नियमा से परिचित इन उद्योगपतिया ने खद्दर के समातर प्रचार को अपने औद्योगिक कायक्रम के लिए खतरनाक नही माना। यह बात अजीब लग सकती है, लेकिन मशीन पर आधारित आधुनिक उद्योगो को चलाने बढाने और उससे फायदा कमाने वाले कुछ लोगो ने भी हाथ के बुने खद्दर का इस्तमाल शुरू किया और खद्दर आदानन को आर्थिक सहायता भी दी। उन्होन यह समझा कि काग्रेस और काग्रेस द्वारा चलाए गए आदोलना मे ब्रिटिश सरकार को आर्थिक और राजनीतिक रियासत के लिए बाध्य किया जा सकता है और इससे उनके वग को फायदा है।

फिर वग सम वय सपत्ति पर पूजीपतियो की न्यासिता और पूजीवादी पिता है, मजदूर उनकी सतान' आदि सिद्धाता पर आधारित गाधीवादी समाज दशन उद्योगपतिया को भी पसद आया। वग सघप के आधार पर विकसित हो रह मजदूर आदालना से उन्ह इस दशन मे बचाव नजर आया।

वग सघप के सिद्धात का गाधी न जा अनवरत विरोध किया, उसके कारण वे उद्यागपतिया के बीच समादृत हुए। उद्यागपतियो न आल इडिया ट्रेड यूनियन काग्रेस को पसद नही किया क्योकि यह ब्रिटिश ट्रेड यूनियन काग्रेस की तरह ही वग सघप के सिद्धात पर आधारित था। लेकिन उन लोगो न मजूर महाजन का समथन किया जा अहमदाबाद के सूती मिलो के मजदूरो का गाधी द्वारा शुरू किया गया सगठन था और वग सामजस्य के सिद्धात पर आधारित था।

बिडला, बजाज, अम्बालाल, साराभाई, कस्तूरभाई लालभाई और अन्य धनाढय उद्योगपतिया न गाधी के एकछत्र नतत्व मे काग्रेस का समथन किया और इसके कायक्रमो के लिए पैसा दिया। उन्होने ग्राम पूजीवादी हस्तशिल्प के पुनरुज्जीवन जैसी योजनाओ को भी आर्थिक सहायता दी। मूलत इन उद्योगपतियो द्वारा आल इडिया स्पिनस एसासिएशन और एस अन्य सगठनो को दिए गए अथ साहाय्य के कारण ही तेजी स खतम हो रहे उत्पादन के पुरान तरीको को बनावटी तौर पर अवलबन देकर जिदा रखा जा रहा था।

गाधीवादी दशन म गरीबी को गौरवान्वित किया गया और विराधी के प्रति प्रेम भावना की शिक्षा दी गई, कम मजदूरी और काम की बुरी स्थिति के कारण बढते हुए मजदूर असतोष का शायद यह दशन सबस अच्छा काट था, और इसी लिए इसके प्रचार के लिए भी उद्योगपतियो न पसा दिया। अगर गरीबी अच्छी चीज है तो ऊचे जीवन स्तर की माग स्पष्टत गलत है।

यह बात अतर्विरोधी लग सकती है, लेकिन इन धनाढय उद्यागपतियो ने स्वय जीवन क गाधीवादी सिद्धातो का अनुकरण करन की कभी काई चेष्टा नही की। गाधीवादी का उन्होन समथन प्रदान किया लेकिन व स्वय सपत्ति और मुनाफे के प्रेम म पडे रह, और उसस चिपटे रह।

उद्योगपतिया न फिर भी गाधी के नेतृत्व म गाधीवादी सिद्धातो आधारित इडियन नशनल काग्रेस द्वारा सगठित जा आदोलना कामहत्व

Scanned with CamScanner

सरक्षण, अनुकूल अनुपात (जो गाधी क ग्यारह सूत्री मागा म एक था, देखे अध्याय 10) जसी अपनी मागा की पूर्ति के लिए उद्योगपतियो ने इन आदोलना का इस्ते माल किया।

कृषि सवधा के रूप और प्रकार के कारण भी भारत का तेज आर्थिक विकास सभव नही हो पा रहा था। कृषि के पुनर्निर्माण के लिए और कृषक आबादी की आर्थिक स्थिति म सुधार के लिए, जिससे लोगा की क्रय शक्ति म वद्धि हा, मूल भूत सुधार की आवश्यकता थी। भारतीय उद्याग तेजी से तरक्की करे इसके लिए आवश्यक था कि उनके उत्पादनो को खरीदने वाली कृषक आबादी समृद्ध हो।

लेकिन भारतीय उद्योगपतियो ने मूलभूत कृषि सबधी सुधारो के कायक्रम म कोई दिलचस्पी नही दिखाइ। इसकी वजह थी कि भारत म जमीदार और पूजी पति वग एक दूसरे स जुडे हुए थ। जमीदारा ने उद्यागो और वका मे पसा लगाया और वकर और उद्योगपतियो को भी जमीन जायदाद थी।

1937 म जो काग्रेस सरकारें बनी, उनकी वामपथी राष्ट्रवादियो न पूजीवादी झुकान रुझान क लिए आलोचना की (देखे अध्याय 10)। इन आलोचका का विचार था कि उद्योगपतिया न काग्रेस का इसीलिए समथन किया कि काग्रेस न उनके हितो की रक्षा की।

बबइ के सूती मिल मजदूरा की हडताल के वक्त सरकार द्वारा पुलिस का इस्तेमाल ट्रेडस डिस्प्युटस एक्ट, अहमदाबाद और शालापुर म मजदूरा की सभाआ पर प्रतिबध विभिन्न प्रातो म काग्रेसी सरकारो द्वारा कुछ मजदूर नताआ का जेल म डालना या देश निकाला देना, आलोचका न इन बातो की तरफ लोगा का ध्यान आकर्षित कर यह सिद्ध किया कि काग्रेसी सरकारें पूजीवादी हिता का समथन करती थी।[40]

दूसरे वर्गों की तरह औद्योगिक बुजुआजी न भी अपन हितो की रक्षा के लिए और अपनी मागा को आग वढान क लिए कई सगठन बनाए। 1875 म बाब मिल ओनस एसोसिएशन 1881 म इडिया टी एसोसिएशन 1884 म इडियन जूट मिल एसोसिएशन 1891 म अहमदाबाद मिल ओनस एसोसिएशन बना 1927 म इडियन चेबस आफ कामस एड इडस्ट्री का महासघ 1920 म सदन इडिया एम्प्लायस फेडरशन 1933 म आल इडिया आगनाइजेशन आफ इडस्ट्रियल एम्प्लायस और 1933 म एम्प्लायस फेडरशन आफ इडिया बना।

भारतीय अथतत्र विकास के एकाधिकार पूजी वाले चरण म पहुच चुका था। उद्यागा वाले अध्याय म इस बात की चर्चा की गई है कि कस उद्यागपतियो की दिनानुदिन घटती हुई सख्या म यह प्रवत्ति बढती गइ कि उद्याग की किसी विशेष शाखा पर या किसी उद्योग की समष्टि पर या उद्यागा क समुदाय पर ही एकाधिकार स्थापित कर लिया जाए। इसके कारण देश की जनता के आर्थिक ही नही वरन सामाजिक, बौद्धिक राजनीतिक जीवन पर भी कुछ थाडे उद्योगपतियो और अथ पतिया की जकड मजबूत हाती गई। अखबारा के उदाहरण स इस स्थान का साम

Scanned with CamScanner

तौर पर समझा जा सकता है। बिडला ने बहुत सारे अखबार खरीद लिए जिससे उसे इन अखबारो को पढने वाली जनता के विचार और दृष्टिकोण का अपने इच्छानुसार मोड सकने की ताकत मिली। यह स्थिति पहले की स्थिति से भिन्न थी, अब सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आगरकर तिलक और अन्या य लोग अखबार चला सकत थे और अपने विचारो का स्वतन्त्र प्रचार कर सकत थे। बडे बडे व्यवसायियो न अधिकाधिक अखबारा पर अपना शासन और प्रबध कायम किया और इस तरह जनसमुदाय के विचारो पर नियन्त्रण प्राप्त किया। दूसरे उद्योगो म भी यही प्रवत्ति देखी जा सकती है। आर्थिक एकाधिकार के कारण लागो के बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन पर भी एकाधिकार का नियन्त्रण बढता जा रहा था।

भारत मे आधुनिक सवहारा वग का उदय

अब हम भारत के आधुनिक मजदूर वग की चर्चा करेग जो कई अ य वर्गा की तरह नया वग था। भारत म अग्रेजी शासन काल म आधुनिक उद्योग धधो, यातायात के आधुनिक साधनो और बागानो की स्थापना हुई, जिसके कारण आधुनिक मजदूर वग का जन्म हुआ। जैसे जैसे बागाना आधुनिक कल कारखानो, खनिज उद्योगा, आवागमन के साधना आदि म वद्धि हुई वसे-वसे इस वग की सख्या म भी वद्धि हुई। भारतीय सवहारा वग मुख्यत उन किसानो और हस्त शिल्पकारा से निर्मित हुआ जो दरिद्र हो गए थे और अब मजदूरी कमाने लग थे।[41] भारतीय मजदूरा के जीवन यापन और काय के हालात इतने निम्न स्तर के थे कि सरकारी और गैर सरकारी दोना प्रकार क लखका न इसकी चचा की।

> सब तरह की जाच पडताल म यही पता चलता है कि भारत के अधिकाश मजदूर एक शिलिंग प्रतिदिन से अधिक नही कमाते ह।[4]
>
> हम लोग जहा कही भी ठहर, वहा हमने मजदूरो के घर देखे, और अगर हम इ ह नही देख होते तो हम यह विश्वास नही कर पाते कि इतनी बुरी जगह भी कही ह
>
> हर जगह लागो की भीड और अस्वास्थ्यकर हालतें इनसे पता चलता है कि सरकारी पदाधिकारियो न अपन स्पष्ट कत्तव्यो की निमम उपक्षा का है।[43] -

1938 म जिनवा म हुए इटरनेशनल लेबर कान्फरेंस म भारताय मजदूरो के प्रतिनिधि एस० पी० परुलेकर न अपने भाषण म कहा भारत म अधिकाश मजदूरा को जो मजदूरा मिलती है वह इसके लिए भी काफी नही कि उन्ह जीवन की यूनतम आवश्यकताए उपलब्ध करा सके बीमारी बरोजगार बुढापा और मृत्यु के विरुद्ध भारत के मजदूरो को कोई सुरक्षा नही प्राप्त है।[44]

जितनी कम मजदूरी उन्ह मिलती थी उसके आधार पर वे अपन और अपन परिवार का भरण पोषण करन म असमथ थ। इसलिए उनम स अधिकाश ऋण ग्रस्त थे। ह्विटली कमीशन ने अपन निष्कप म कहा, अधिकाश औद्योगिक केंद्रो

Scanned with CamScanner